150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

VAAGDHARA

कृषि एवं जनजातिय स्वराज संप्रभुता अभियान – 2019

मार्गदर्शिका

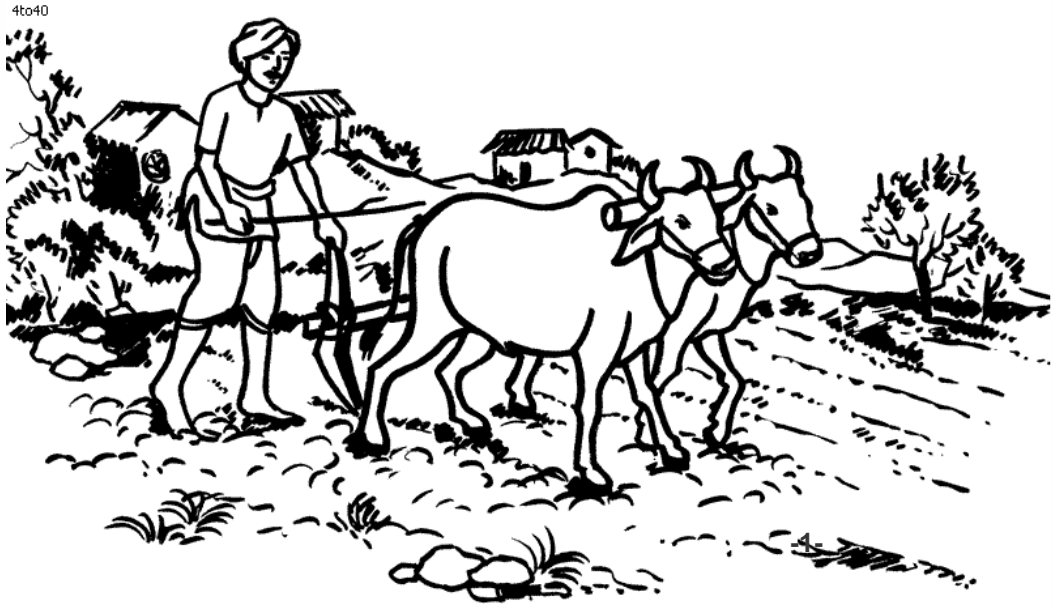

VAAGDHARA
Contact Us:

E-mail : vaagdhara@gmail.com
Website : www.vaagdhara.org
H.O. :
Village and Post Kupra
District Banswara-327001
Rajasthan
Ph. : +91-9414082643
State Coordination Office :
9,1st Floor, Lane No: 12,Sharda Colony,
Gandhi Path, Vaishali Nagar
Jaipur-302021
Ph:+ 91 141 2351582

Field Units :
JSSSI Ghatol, Banswara
JSSSI Anandpuri, Banswara
JSSSI Kushalgarh, Banswara

20 quality
9414102442

द. सक्षम समूह की भूमिका

1. गाँव में बच्चों के लिए खेल मैदान के स्थान का चयन, जहाँ श्रमदान किया जावेगा।
2. मिट्टी-पूजा के लिए गाँव की अलग-अलग प्रकार की मिट्टी को खोज कर उनको एकत्र करना।
3. विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ चर्चा करके उनको भी कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करना।
4. विद्यालय परिवार एवं बच्चों को इस कार्यक्रम में सम्मिलित करना।
5. गाँव के सभी लोगों को इस अभियान के साथ जोड़ना।
6. विविध फसलों के बीजों को एकत्र करने के लिए लिफाफे और फॉर्मेट देना।
7. यदि संभव हो सके तो बच्चों के लिए खेल-कूद का आयोजन करना।

भारत के केन्द्र में स्थित जनजातिय क्षेत्र में समुदाय के साथ कार्यरत वागधारा, एक सामाजिक विकास संस्था हैं, जो क्षेत्र में जनजातिय-समाज की संप्रभुता और टिकाऊ विकास के लिए समर्पित है। समाज के सम्मिलित विकास के अपने स्वप्न को साकार करने के लिए कई कार्यक्रमों और परियोजनाओं के माध्यम से कार्यरत है। इन कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण है, जनजातिय समुदायों की मांग को विभिन्न स्तरों तक सफलतापूर्वक ले जाना और इसके लिए एक प्रभावी कार्य है, समुदाय के प्रतिनिधियों को एक ऐसा स्थान प्रदान करना जहाँ वे बैठकर नीतिगत कार्यों के लिए नीति निर्माताओं से चर्चा कर सके। इस प्रयास में विगत वर्षो से जनजातिय सम्प्रभुता यात्रा एवं समागम का आयोजन किया जाता रहा है। जिसमे एक स्थान पर सभी सरोकारियों, जनजातिय विकास से जुड़ी संस्थाओं और विभागों को आपसी चर्चा का वातावरण प्रदान करना रहा है।

इस वार्षिक-समागम के माध्यम से वागधारा का उद्देश्य है की ''जनजातिय समाज के अगुवा-जन अपने सामूहिक विषयों पर सामूहिक चर्चा कर सकें और उन्हें अन्य सरोकारियों से साझा करके अपने लिए नीतिगत बदलाव की वकालत करने की दिशा में प्रभावी कदम उठा सकें। वागधारा एक ऐसा अवसर प्रदान करेगी जिसमे जनजातिय विकास की संस्थाएं, नीति-निर्माता, शिक्षाविद, नीतिगत कार्य को समर्पित व्यक्ति और संस्थान, जन-संचार प्रतिनिधि और अन्य सरोकारी साथ मिलकर एक कार्यक्रम तैयार करें जो जनजातिय समुदाय के लिए उनकी परम्पराओं और संस्कृति को प्रभावित किये बिना, उन्हें विकास की मुख्यधारा में लाने का कार्य कर सके।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वागधारा द्वारा गाँधीजी की 150 वी जयंती के अवसर पर जनजातिय स्वराज अभियान 2019 का आयोजन राजस्थान, मध्य-प्रदेश और गुजरात के संगम पर आधारित जनजातिय हृदय स्थल पर किया जा रहा हैं।

इसमें इन तीनो राज्यों के जनजातिय क्षेत्र से प्रतिनिधि भाग लेकर अपने क्षेत्र के मुद्दों को चर्चा में लायेंगे और उन्हें अन्य सरोकारियों के साथ मिलकर नीतिगत विकास पर अपने समुदाय की स्वराज सोंच के साथ सम्प्रभुता पर कार्ययोजना का निर्माण करेंगे। पुरे कार्य की रणनीति का ढांचा मुख्यतः ''सरंक्षित करना – प्रदान करना – बढ़ावा देना'' के सिद्धांतो पर केन्द्रित होगा। अभियान में इस-वर्ष की प्राथमिकता इस प्रकार हैं:-

1. मिट्टी, बीज, जैव विविधता एवं पीढ़ियों के संरक्षण व पोषण में समुदाय की भूमिका, सरकार से आग्रह व कर्षक समुदाय की जिम्मेदारियां।
2. बीजों के विषय में आत्म-निर्भर कृषक समाज की स्थापना कैसे की जा सकती है ? बीजोपचार और रोग रहित बीज-प्रबंधन कैसे होगा।
3. जैव विविधता, जनजातिय ज्ञान व विधाओं से समाज व सृष्टी को क्या दे सकते है।
4. गांधीजी के स्वराज की अवधारणा को समुदाय की सहभागिता एवं स्वयं-सेवकों के माध्यम से अमली- जामा कैसे पहनाया जा सकेगा ?
5. अपने गाँव में 100 प्रतिशत बच्चे शिक्षा से जुड़े तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कैसे प्राप्त कर सकते हैं, इसको कैसे सुनिश्चित करेंगे ? अपने गाँव को बाल मित्र कैसे बनायेंगे जिससे सभी बच्चों को उनके सभी अधिकार मिले एवं इसमें समुदाय की भूमिका क्या होगी ?

अतः इस अभियान के सफल आयोजन के लिए व्यक्ति , परिवार, समुदाय और समुदाय आधारित संगठनों की जिम्मेदारियां निर्धारित की गई है।

6. यदि संभव हो सके तो बच्चों के लिए खेल-कूद का आयोजन करना।
7. प्रधान-अध्यापक और अन्य अध्यापकों के साथ चर्चा कर उन्हें एवं बच्चों को इस कार्यक्रम में सम्मिलित करना।
8. गाँव के मिट्टी के बारे में जानकारी एकत्र करना, और श्रमदान के लिए स्थान और कार्य का चयन।
9. गाँव के सभी लोगों को इस अभियान के साथ जोड़ना।
10. अपने गाँव की आधारभूत जानकारी जुटाना और उसको निश्चित फॉर्मेट में भर-कर लाना।
11. गाँव के सभी ''स्मार्ट फोन धारकों'' के गाँव के नाम के साथ ''..... ..... विकास समूह'' बनाना।

स. सामुदायिक कार्यकर्त्ता (कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन) की भूमिका

1. प्रत्येक गाँव के विकास स्वयंसेवकों के साथ नियमित चर्चा करके आयोजन सम्बंधित तैयारीयों को अंजाम देना।
2. विकास स्वयं सेवकों के माध्यम से अपने क्षेत्र के सभी गाँव में ''स्मार्ट फोन धारकों'' के गाँव के नाम के साथ ''..... ..... विकास समूह'' बनाना और स्वयं भी उस समूह के एडमिन में रहना।
3. JSS स्तर के समूह से मिलने वाली जानकारी को अपने समूहों में प्रसारित करना।
4. स्वयं सेवकों को विविध फसलों के बीजों को एकत्र करने के लिए लिफाफे और फॉर्मेट देना।
5. स्वराज-समागम में प्रतिनिधित्व करने के लिए अगुआ कृषकों (महिला/पुरुष) का चयन।

- व्यक्ति विशेष का नाम लेकर चर्चा नहीं करनी।
- समुदाय के साथ झूठे आश्वासन व वादे नहीं करना।
- बैठक स्थान विवादास्पद न हो।

प्रत्येक स्तर की भूमिका

अ. ग्राम विकास एवं बाल-अधिकार समिति की भूमिका

1. गाँव में बच्चों के लिए खेल मैदान के स्थान का चयन, जहाँ श्रमदान किया जावेगा।
2. विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ चर्चा करके उनको भी कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करना।
3. विद्यालय परिवार एवं बच्चों को इस कार्यक्रम में सम्मिलित करना।
4. गाँव के सभी लोगों को इस अभियान के साथ जोड़ना।
5. यदि संभव हो सके तो बच्चों के लिए खेलकूद का आयोजन करना।

ब. विकास स्वयं सेवकों की भूमिका

1. ग्राम विकास एवं बाल-अधिकार समिति के सदस्यों के साथ नियमित बैठक करकें आयोजन को सफल बनाने की तैयारी करना।
2. गाँव में बच्चों के लिए खेल मैदान के स्थान का चयन, जहाँ श्रमदान किया जावेगा।
3. विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ चर्चा करके उनको भी कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करना।
4. गाँव में बच्चों की स्थिति की जानकारी के आंकड़े एकत्र करना और सामुदायिक कार्यकर्ता के साथ समन्वयन बनाये रखना।
5. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सम्बंधित जानकारी एकत्र करना।

अभियान की रुपरेखा

सच्चे-बचपन और सच्चे स्वराज पर अभियान

- राष्ट्रीय बाल दिवस - 14 नवम्बर 2019
- 1000 गाँव में 24 जनजातिय स्वराज संगठनों और 1000 ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों द्वारा बच्चों के लिये खेल मैदान पर श्रमदान
- 1000 स्कूल के 50000 बच्चो की सहभागिता
- गाँव में बाल अधिकार की वर्तमान अवस्था की जानकारी संकलित करके समुदाय में चर्चा
- गाँव को बाल-मित्र गाँव बनाने के लिए शपथ पत्र

कृषि सम्प्रभुता अभियान- सच्ची खेती

- विश्व मृदा दिवस - 5 दिसम्बर 2019
- 1000 गावों में 24 जनजातिय स्वराज संगठनों और 1000 ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों द्वारा गाँव के तालाब या अन्य स्थान पर मिट्टी बचाव के लिए श्रमदान
- गाँव की खाद्य विविधता की सूची तैयार करना
- जैव विविधता एवं खाद्य विविधता से कुपोषण भगाने पर चर्चा
- मिट्टी एवं बीज पूजा तथा गाँव का मिट्टी बचाव के लिए शपथ पत्र व सरकार को ज्ञापन

जनजातिय संप्रभुता समागम

- अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस -10-11 दिसम्बर 2019
- 3000 समुदाय के सदस्य, 1000 जनजातिय विकास स्वयं सेवक, 24 जनजातिय स्वराज संगठन
- जनजातिय विकास में जुड़े संस्थान और शिक्षाविद
- जनजातिय कार्य से जुड़े विभाग
- गाँधीजी की शिक्षा और वागधारा की विकास की अवधारणा

इस प्रकार गांधीजी की जयंती 2 अक्टूबर 2019 से प्रारंभ इस वार्षिक अभियान का पड़ाव आएगा और हमारे पास होगा एक प्रारूप, एक कार्यक्रम, जिससे हम वागड़ भूमि, जनजातिय समाज के बीच एक ऐसा आधार निर्मित करेंगे जिससे सम्मिलित विकास के माध्यम से सच्ची-खेती को सच्चे स्वराज के मूल्यों के साथ अपना सके और अपने आने वाली पीढीयों को सच्चा-बचपन प्रदान कर सके। क्षेत्र के लगभग 4000 जनजातिय सदस्य की भागीदारी, वृहत समुदाय द्वारा

विभिन्न मुद्दों पर स्वंय-सेवकों के माध्यम से प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस दिन की अनुशंसा, मांग-पत्र और मुद्दे जनजातिय संप्रभुता पर काम कर-रही संस्थाओं और विभागों को अपनी रणनीति और कार्यक्रम तैयार करने में मददगार होंगे।

सच्चे बचपन और सच्चा स्वराज
''बाल-मित्र गाँव'' के लिए बाल-दिवस का आयोजन

वागड़ के गावों को किसान सम्प्रभुता की दिशा में ले जाने का पहला कदम है गाँव को ''बालमित्र बनाना'' और इसके लिए गाँव में सच्चा स्वराज स्थापित होना भी अत्यंत आवश्यक है। अतः इस वर्ष वागधारा द्वारा समुदाय के साथ मिलकर अपने कार्य क्षेत्र के तीनों राज्यों के 1000 गावों में 14 नवम्बर 2019 को एक साथ ''राष्ट्रीय बाल दिवस का आयोजन किया जा रहा है। राष्ट्रीय बाल दिवस पर अभियान की समुदाय आधारित संवाद की कड़ी आयोजित की जाएगी।

समयकार्य

समय	कार्य
09.00 से 10.00	ग्राम भ्रमण करके समुदाय को एकत्रित करना
10.00 से 10.10	बाल अधिकार पर संस्था सचिव का उद्बोधन
10.10 से 11.15	बाल-अधिकार के बारे में वस्तु-स्थिति को समुदाय के साथ चर्चा करना जैसे बालिका शिक्षा की स्थिति, बालश्रम की स्थिति पर चर्चा, कु-पोषण की व्यापकता, बाल-अधिकार समिति के सदस्यों से चर्चा
11.15 से 11.45	बाल-अधिकार पर पोस्टर का विमोचन एवं फिल्म प्रस्तुती करण, खाद्य-विविधता और पोषण पर चर्चा
11.45 से 12.45	बाल दिवस के कार्यक्रम का आयोजन
12.45 से 01.45	स्कूल/पाठशाला में श्रमदान करके खेल के लिए मैदान/पोषण वाटिका का निर्माण
01.45 से 02.00	ग्राम को बाल-मित्र बनाने के लिए शपथ

उपसंहार

इस प्रकार गांधीजी की जयंती 2 अक्टूबर 2019 से प्रारंभ इस वार्षिक अभियान का पड़ाव आएगा और हमारे पास होगा एक प्रारूप, एक कार्यक्रम, जिससे हम वागड़ भूमि, जनजातिय समाज के बीच एक ऐसा आधार निर्मित करेंगे जिससे सम्मिलित विकास के माध्यम से सच्ची-खेती को सच्चे स्वराज के मूल्यों के साथ अपना सके और अपने आने वाली पीढीयों को सच्चा-बचपन प्रदान कर सके। क्षेत्र के लगभग 4000 जनजातिय सदस्य की भागीदारी, वृहत समुदाय द्वारा विभिन्न मुद्दों पर स्वंय-सेवकों के माध्यम से प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस दिन की अनुशंसा, मांग-पत्र और मुद्दे जनजातिय संप्रभुता पर काम कर-रही संस्थाओं और विभागों को अपनी रणनीति और कार्यक्रम तैयार करेने में मददगार होंगे।

अभियान से अपेक्षाएं –

- गाँवो से पुराने बीज,रीति रिवाज और संगठनों के बारे में जानकरी मिलेगी।
- गाँव के संगठनों के कार्य करने की क्षमता में बदलाव आएगा।
- गाँवो की वर्तमान स्थिति क्या हैं और आवश्यकता क्या हैं।
- सभी गाँवो के समुदाय को एक प्लेटफार्म पर लाना व गाँव के विकास की प्रक्रिया से जोड़ना।
- कम समय में अधिक से अधिक समुदाय के साथ संवाद होगा।
- आयोजन से परम्परागत चीजों को लोग अधिक से अधिक उपयोग में लाएंगे।

ध्यान देने योग्य बाते–

- बैठक स्थान का चयन गाँव के बीच में हों जहाँ सभी लोगो की पहुँच हो सके।
- बैठक में वंचित बच्चे एवं परिवारों की सहभागिता सुनिश्चित हो।
- चयनित मुद्दो पर ही चर्चा केन्द्रित हो।
- राजनैतिक चर्चा नहीं करनी हैं।

दूसरा दिन
गांधीजी–कस्तुरबा और ग्राम स्वराज (150वीं जयंती)

आज के कार्यक्रम का विवरण ''वृहत समुदाय (4000–5000) सदस्यों द्वारा मुद्दों की स्वीकार्यता को अपनाना और उसे संयुक्त मांग बनाना। चर्चा की अनुशंषा और मांग–पत्र को प्रस्तुत करके इस दिशा में जाने के लिए एक दूरगामी कार्यक्रम तय करना।

समय	कार्य
06.30 से 7.30	दैनिक कार्य से निवृति एवं चाय
7.30 से 9.30	श्रमदान यात्रा
9.30 से 11.00	पंजीकरण एवं नाश्ता Registration and Breakfast
11.00 से 11.45	सर्व–धर्म प्रार्थना
11.45 से 12.15	उद्घाटन सत्र Inaugural session ● आयोजन के प्रयोजन पर प्रस्तुति ● जनजातिय किसान स्वराज मंच द्वारा ''मांग–पत्र'' की प्रस्तुति
12.15 से 12.25	गांधीजी और ग्राम-स्वराज पर चलचित्र (महादेव भाई देसाई)
12.25 से 12.45	गांधीजी और वागधारा के प्रयास – जयेश जोशी
12.45 से 13.15	सच्चा–बचपन: बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति
13.15 से 13.45	कुपोषण भगाने के लिए-सच्ची खेती पर प्रस्तुति और चलचित्र
13.45 से 14.15	सच्चा स्वराज और स्वयं सेवक की भूमिका–सांस्कृतिक प्रस्तुति
14.15 से 14.45	मुख्य अतिथियों द्वारा उद्बोधन (राष्ट्रीय संस्थान अंतर्राष्ट्रीय संस्थान अधिकारीगण नेतृत्व एवं मुख्य-वक्ता)
14.45 से 14.55	जनजातिय मित्र पुरस्कार वितरण
14.55 से 15.05	मेहमानों को स्मृति चिन्ह देना एवं धन्यवाद ज्ञापन
15.05 से 16.30	भोजन एवं प्रस्थान

कुछ विचारणीय प्रश्न

- क्या हमारा गाँव बच्चों के लिये उपयुक्त जगह हैं ?
- हमारे बच्चो को कौन–कौन से अधिकार मिलते हैं ?
- हमारे गाँव में कितनी कक्षा तक पढ़ाई होती हैं ?
- कितने बच्चें दूसरी जगह पढ़ने जाते है ?
- क्या लड़कियां भी अन्य गाँव में पढ़ने जाती हैं ? हमारे बच्चों की शादी की उम्र क्या हैं ?
- गाँव में ऐसा कोई बच्चा जो 18 वर्ष से कम हो और माता पिता के साथ पलायन के लिए जाता हैं ?
- आज कल बिमारियां अधिक होने का कारण क्या हैं ? खुद का उपजाया हुआ और बाजार से खरीदा हुआ भोजन में क्या अंतर होता हैं।
- हमारे गाँव में कितनी आंगनवाड़ी हैं और क्या गाँव के सभी 6 वर्ष आयु तक के बच्चे आंगनवाड़ी से जुड़े हैं ?
- गाँव में गर्भवती और धात्री महिलाओं को आंगनवाड़ी से खाने के लिए कितने पैकेट दिए जाते हैं ? गाँव में गर्भवती महिला और बच्चों का टीकाकरण कब होता हैं ?
- परम्परागत रूप से जनजातिय समुदाय में बच्चों की क्या स्थिती थी एवं इस बदलते परिदृश्य से उसमे क्या बदलाव आया।

पूरे देश में बाल अधिकार योजनाओं को फैलाना, प्रचारित और प्रसारित करना है। बच्चों के रहने की स्थिति को गहराई से निगरानी कर उचित पर्यावरण उपलब्ध कराना

हमारा दायित्व है।

गाँव को बाल-मित्र बनाने के लिए शपथ पत्र

आज से हम निवासी ..... ग्राम, जम्बुखंड यह शपथ लेते हैं कि ''आदिवासी संस्कृति एवं परम्पराओं को अपने बच्चों के विकास के लिये सुरक्षित और प्रभावी बनाने के लिये हम अपने गाँव .....को अब से बालमित्रवत बनाने के लिए कार्यरत रहेंगे। ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियो को विकास के सभी अवसर प्राप्त हो और वे अपने, अपने परिवार, अपने समाज, अपने गाँव, अपने क्षेत्र, अपने राज्य, अपने देश, और अपने विश्व के विकास के भागीदार बन सके।

- ग्राम-चोपाल की स्थापना करके अपने गाँव में बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के लिये अपने गाँव को सबसे उपयुक्त स्थान बनायेंगे जिससे वे भी विकास में साथ चलें।
- हमारे गाँव में प्रत्येक बच्चे जिसमे बिना लड़के लड़की के भेदभाव के मानसिक विकास के लिए उम्र अनुसार, आंगनवाड़ी, बालवाड़ी, माँ-बाड़ी, पाठशाला से जुड़ाव होगा, कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं होगा व पलायन (दुसरे शहरों में काम पर जाना) से रोकते हुए बच्चों को बालश्रम से मुक्त करवाना।
- सभी बच्चों का उपयुक्त शारीरिक विकास हो उसके लिए उन्हें संतुलित आहार को ध्यान में रखते हुए गाँव व परिवार आधारित पोषण सुरक्षा कैसे की जाए व पोषण हेतु दुसरो पर निर्भरता किस प्रकार कम की जाए इस हेतु प्रत्येक परिवार प्रयास करेगा।
- लड़के-लड़की में भेद-भाव नहीं करना व ना ही होने देना तथा बाजार के प्रभाव में आकर भ्रुण हत्या जैसी किसी भी गतिविधि को हमारे क्षेत्र में नहीं होने देने के लिए प्रयास करेंगे।
- बच्चों के सुरक्षा प्रदान करने के लिए गाँव के सक्रिय युवक-युवतियों को जागरूक करके उन्हें संगठित करना ?
- विद्यालय में बालमित्र वातावरण बने इसके लिए अध्यापकों के साथ मिलकर वृक्षारोपण, पोषण वाटिका, मध्यान्ह भोजन में यथा शक्ति सहयोग करना।

समयकार्य

समय	कार्य
09:30 to 11:00	पंजीकरण एवं नाश्ता Registration and Breakfast
11:00 to 12:00	उद्घाटन सत्र Inaugural Session
12:00 to 14:00	समूह चर्चा - तालिका 1 विषयवार चर्चा - तालिका 2
14:00 to 15:00	भोजन
15:00 to 17:00	समुदाय और सरोकारियों के बीच चर्चा : चित्र-2 के अनुसार
17:00 to 18:00	बीज और खाद्य-सामग्री विविधता की प्रदर्शनी : बीज आदान प्रदान
18:00 to 18:30	चाय-नाश्ता
18:30 to 20:00	सांस्कृतिक कार्यक्रम
20:00 to 21:00	रात्री भोजन
21:00	आराम

पहला दिन

विषयात्मक चर्चा के माध्यम से समुदाय द्वारा ''मुद्दों की सूची तैयार करना'', इस दिन विभिन्न जनजातिय स्वराज संगठनों के प्रतिनिधि तीन प्रमुख विषयों सच्चा-बचपन, सच्चा स्वराज एवं सच्ची खेती पर चर्चा करेंगे। इसमें तीनो राज्यों के लगभग 4000 जनजातिय प्रतिनिधि मिलकर विशिष्ट मुद्दों को लेकर चर्चा करेंगे। नीचे दी गई तालिका अनुसार चर्चा के मुख्य बिंदु होंगे :-

सच्ची खेती		सच्चा बचपन	सच्चा स्वराज
किसान समूह (महिला व पुरूष)		महिला, पुरूष और बच्चे	विकास स्वयं सेवक
मिट्टी कटाव और बहाव को कैसे रोके? मिट्टी को पुनर्जीवित कैसे करें?	अपने बीजों को रोग रहित, अधिक उपजाऊ व जलवायु परिवर्तन सक्षम कैसे बनाये	अनुभव चर्चा और सुझाव बाल संसद	गाँव विकास के मुद्दों में भागीदारी बढ़ाने का कार्यक्रम
● भूमि बिगाड़ और भूमि सुधार ● हमारे गाँव की मिट्टी को पुनर्जीवित करने के लिए क्या-क्या प्रयास कराने की आवश्यकता है? ● कुपोषण मुक्त जनजातिय विकास	● जनजातीय-खान-पान और पोषण को मजबूत करने के लिए बीजोपचार की आवश्यकता ● चक्रीय-अर्थव्यवस्था और जनजातीय जीवनशैली	● बाल-पलायन ● बाल-श्रम ● सहभागिता का अधिकार ● खेलकूद और विकास ● बालमित्र समुदाय मैं और मेरा गाँव	● ग्राम-सभा की क्यों जरूरत है? ● विकास-स्वयं-सेवक की ग्राम सभा में भूमिका

● बच्चों में कुपोषण ना हो इसके लिए पोषण विविधता को पुनर्जीवित करने के लिए परंपरागत फसलों की पहचान, बीजो का संग्रहण व उनका प्रसार-प्रचार करेंगे।

इस प्रकार से प्रयास करेंगे की वागड़ अंचल में सच्चा बचपन व सच्चा स्वराज के माध्यम से बापू के स्वराज की स्थापना हो।

तथास्तु .....

स्वराज व संप्रभुता का आधार

स्वस्थ मिट्टी और स्वस्थ बीज

राजस्थान, मध्य-प्रदेश और गुजरात राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्र, स्थानीय जनजातिय समुदाय की जन्म और कर्म स्थली है। जनजातिय जीवन के इस केंद्र स्थल की जमीन उबड़-खाबड़ है और जलवायु एक माध्यम है। वर्षा का औसत 900 से 1100 मिलीमीटर है जो आस-पास के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अच्छा है, परन्तु जलवायु की स्थिति मित्रवत होने के बावजूद भी उत्पादन कम है और कम होता जा रहा है। यहाँ के युवा अब प्रदेश के महानगरों में मजदूरी के लिए पलायन करने लगे हैं, परिणामस्वरुप जमीन और मिट्टी को उपजाऊ बनाये रखने के लिए किये जाने वाले प्रयास कमजोर हो रहे हैं। इस तरह से जो एक कु-चक्र विकसित हो रहा हैं। वह कहीं तो स्थापित हो गया है और कहीं स्थापित हो रहा है।

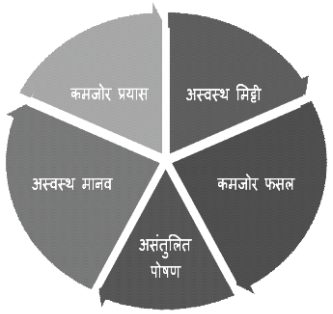

युवा और मृदा दोनो ही अब गाँव छोड़ रहे हैं, गावों का आधार कमजोर हो रहा है, समाज बिखर रहा है, बड़े-बुजुर्ग असमंजस में हैं, युवा भ्रमित, तो नेतृत्व नि:शब्द। ये सभी स्थितियां दिखती तो अलग-अलग है,

परन्तु इनके सभी के तार आपस में इस तरह से जुड़े है कि एक का प्रभाव दुसरे पर अवश्य होता है। इसको ध्यान में रखते हुए क्षेत्र से जुड़ी विकास संस्थान, समूह और मंच ने इस वर्ष 1000 गावों में 5 दिसम्बर 2019 को एक साथ ''विश्व मृदा दिवस'' पर अभियान की समुदाय आधारित संवाद की कड़ी आयोजित की जाएगी।

इस अभियान के तहत भिन्न-भिन्न क्लस्टर के जनजातिय- स्वराज संगठन अपने कार्य-क्षेत्र के प्रत्येक गाँव में स्थानीय सक्षम समूह, ग्राम-विकास एवं बाल-अधिकार समिति, पंचायत, स्थानीय नेतृत्वकर्ता के साथ मिलकर अपने गाँव के विकास में मिट्टी के योगदान व अपने गाँव की मिट्टी के स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति तथा मिट्टी का मिट्टी के द्वारा पोषण पर चर्चा करेंगे एवं अपने गाँव की मिट्टी को पुनर्जीवित करने के लिए कौन-कौन से कार्य करना जरुरी हैं, इस-पर भी चर्चा करेंगे। 5 दिसम्बर के दिन ''विश्व मृदा दिवस'' को एक त्यौहार के रूप में मनाया जावेगा। सभी किसान अपने-अपने खेत की मुठ्ठी-मुठ्ठी मिट्टी को एक स्थान पर एकत्रित करके, उसकी पूजा अर्चना करेंगे, अपने-गाँव की मिट्टी को बचाने और पुनर्जीवित कराने के लिए संकल्प लेंगे।

समयकार्य

समय	कार्य
09.00 से 10.00	ग्राम भ्रमण करके समुदाय को एकत्रित करना
10.00 से 10.10	स्वस्थ-मृदा, स्वस्थ-बीज, और स्वस्थ-मानव पर संस्था सचिव का उद्बोधन
10.10 से 11.15	गाँव में मिट्टी की उत्पादकता के बारे में वस्तु-स्थिति पर चर्चा करना जैसे मिट्टी का कटाव, मिट्टी का बह कर जाना, मिट्टी की ताकत,मिट्टी के स्वास्थ्य पर चर्चा रिकॉर्ड करके गाँव में सुनाना। कुपोषण की व्यापकता, स्वस्थ बीज और जैव विविधता पर चर्चा
11.15 से 11.45	मिट्टी के बारे में फिल्म प्रदर्शन, खाद्य-विविधता और पोषण पर चर्चा
11.45 से 12 .45	तालाब, नर्सरी में श्रमदान करके मिट्टी रोकने के उपाय करना
12.45 से 1.15	मिट्टी व बीजों की पूजा एवं आरती एवं ग्राम को सच्ची-खेती ग्राम बनाने के लिए शपथ

जनजातिय संप्रभुता समागम (Tribal Colloquium)

स्वराज के मुख्य प्रवर्तक महात्मा गाँधी और सच्चे स्वराज व महिला सहभागिता के विकास की प्रवर्तक कस्तुरबा गाँधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित जनजातिय संप्रभुता समागम। इस समागम का आयोजन 10 दिसम्बर 2019 (विश्व मानव अधिकार दिवस) और 11 दिसम्बर 2019 को किया जा रहा है। इस आयोजन में गुजरात, राजस्थान और मध्य-प्रदेश के जनजातिय बहुल सीमावर्ती क्षेत्र के 1000 गाँवो के प्रतिनिधि के रूप में 24 जनजातिय स्वराज संगठनों से 3000 सदस्यों और 1000 विकास स्वयं-सेवक भाग लेंगे। इस दो दिवसीय समागम का मुख्य लक्ष्य न केवल वंचित क्षेत्र बल्कि संसाधनों से भरपूर क्षेत्र के निवासियों के साथ मिलकर क्षेत्र को विकास के सही आयामों की दिशा में ले जाने का मार्ग प्रशस्त करना है। यह 1000 विकास स्वयं-सेवक और 3000 ग्रामीण प्रतिनिधि आने वाले समय में यहाँ के विकास को नेतृत्व प्रदान करेंगे।

दोनों दिनों के कार्यक्रम की रुपरेखा इस प्रकार है : -

पहला दिन

- पूर्वान्हः सहभागियों का पंजीयन
- अपरान्हः समुदाय प्रतिनिधि और विषय-वस्तु विशेषज्ञों के बीच चर्चा
- सरोकारियों और समुदाय के बीच चर्चा
- बीज मेला
- बाल-मेला एवं सांस्कृतिक संध्या

दूसरा दिन

- पूर्वान्हः आये हुवे सुझावों का संकलन
- अपरान्हः वृहत् समाज के साथ उन मुद्दों, सुझावों और कार्य-योजना पर चर्चा
- चिंतनः नीतिगत मुद्दों की वकालत के लिए कार्य-योजना तैयार करना
- जनजातिय मित्र पुरुस्कार एवं अतिथियों का अभिनन्दन
- भोजन के साथ समापन

धरती माता की आरती

ॐ जय धरतीमाता, मैया जय धरतीमाता...
सबका पालन करती, सबका पालन करती,
तूही दुःख हर्ता, मैया तूही दुःख हर्ता ।
फूल, फल, अन्नदेती.... फूल, फल, अन्नदेती ।
है सबकी माता, मैया है सबकी माता।
घास रुखड़ा पाले, घास रुखड़ा पाले...,
पलता जग सारा, मैया पलता जग सारा।
खुद वो प्यासी रहती, खुद वो प्यासी रहती,
सबको दे पानी, मैया सबको दे पानी ।
नदिया नाले बहते, नदिया नाले बहते,
पलता जीव सारा, मैया पलता जीव सारा।
ताल-तलैया बांधों... ताल-तलैया बांधों...
कुआं भर जावे... मैया कुआं भर जावे
गोबर खाद बनाओ, गोबर खाद बनाओ,
उपजे अन्न ज्यादा, मैया उपजे अन्न ज्यादा।
यूरिया डीएपी हटाओ, यूरिया डीएपी हटाओ,
जलती है माता... मैया जलती है माता।
पेड़-पोधे लगाओ, पेड़-पोधे लगाओ,
घास बने साड़ी... मैया घास बने साड़ी।
दलहन को उपजाओ, दलहन को उपजाओ,
निपजे वो ज्यादा हो, मैया निपजे वो ज्यादा
धरती माता की सेवा
जो कोई जन करता, मैया जो कोई जन करता
उसके खेत सुधर जावे, उसके कुआं भर जावे,
उसके घर लक्ष्मी आवे, उसके आनन्द हो जावे,
मैया आनन्द हो जावे
कहत शिवानन्द स्वामी... कहत शिवानन्द स्वामी,
उसका जीवन सुधर जावे
मैया जीवन सुधर जावे...मैया जीवन सुधर जावे
बोल धरतीमात् की......

प्रश्न जो चर्चा के लिए उपयोगी हो सकते हैं :-

- हमारे गाँव में कितने प्रतिशत परिवार खेती से जुड़े हैं,
  क्या हमारे गाँव में कोई भूमिहीन परिवार भी हैं,
  या कुछ जमीन तो सबके पास ही हैं ?
  कितने परिवारों के पास स्वयं के खेत हैं ?
  हमारे गाँव के ज्यादातर किसान किस प्रकार के हैं ?
  सीमांत/छोटे/मध्यम/बड़े ?
- जनजातिय क्षेत्र में मिट्टी व मनुष्य में कुपोषण क्यों है और इसे कैसे दूर किया जा सकता है ?
- हम खेती क्यों करते हैं ? बाजार आधारित हैं या नही ?
  अपने यहाँ खेती में क्या क्या होता हैं ? हमारे गाँव की आज की खेती और पहले की खेती में कोई अंतर हैं क्या, वह अंतर क्या हैं ? आज की खेती करने का सबसे अधिक फायदा किसको हो रहा हैं ?
- पहले और आज की खेती पर खर्च बड़ा हैं या कम हुआ हैं ? हमारी
- आज की खेती का लाभ किसको हो रहा हैं ?
  हमारी खेती में क्या पशुधन का कोई योगदान हैं ? यदि है तो क्या ?
  क्या खेती का पशुधन के रखरखाव में जुड़ाव हैं ?
- वागड़ के परम्परागत पोषक पदार्थ, उनकी ताकत-पोषण क्षमता, पहचान, बीज, जानकारी का आदान-प्रदान।
- परम्परागत खेती व्यवस्था कीटनाशकों व कीट प्रबंधन की पहचान।
- खाद्य विविधताः गाँव की जैव विविधता की सूचि तैयार करना और बीज एकत्र करना। बीज एकत्रीकरण एवं वितरण की व्यवस्था, खेती सम्बंधित अधिक से अधिक जानकारी जुटाना।

- मिट्टी पर चर्चा : हमारे संसाधनों की क्या स्थिति हैं, परम्परागत रूप से मिट्टी का आदिवासी जीवन शैली में क्या महत्त्व था ? मुख्यत: जमीन और मिट्टी की स्थिति ? क्या हमारी मिट्टी जीवंत हैं ? क्या मिट्टी को जीवंत बनाना उपयोगी है ? और हाँ तो मिट्टी को जीवंत कैसे बनाया जा सकता हैं ? उसके लिये गाँव में क्या क्या तरीके होते हैं, क्या हमारे गाँव के किसान इनको अपनाते हैं ?
- बीजो पर चर्चा : हमारी खेती में बीजो का क्या महत्व हैं ? एक स्वस्थ बीज कैसे प्राप्त किया जाता हैं ? हमारे कितने किसान है जो परम्परागत बीजो का प्रयोग करते हैं ? बीजो को उपचारित कैसे करते हैं ? हम में से कितने किसान इसे अपनाते हैं ? क्या परंपरागत फसलों के बीजो को उन्नत बनाया जा सकता हैं ?

शपथ पत्र

आज हम निवासी ..... ग्राम, जम्बुखंड गांधीजी की 150 वी जयंती पर यह शपथ लेते हैं कि ''आदिवासी संस्कृति एवं परम्पराओं को अपने आदिवासी भाइयों, बहनों और बच्चों के विकास के लिये सुरक्षित और प्रभावी बनाने के लिये'' जीवनभर समर्पित रहेंगे।

- गाँव में प्रत्येक जीव-जंतु के लिये प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक वातावरण को स्वस्थ और सुन्दर बनायेंगे। अपने संसाधनों को टिकाऊ बनाये रखने के लिये गाँव का कोई भी हिस्सा बेकार नहीं होने देंगें।
- मिट्टी की ताकत बनाये रखने के लिए अपनी परंपरागत खेती विरासतो जैसे वर्षा आधारित खेती, जैविक खेती, आदि तरीकों का प्रयोग करके मिट्टी को सजीव बनाने का प्रयास करेंगे एवं अन्य साथियों का भी सच्ची खेती से जुड़ाव करेंगे।
- हम पानी को भगवान मानते हैं, हम इसकी एक एक बूंद को बचायेंगे, उनको ताल, तलैय्या, नदी, नाड़ी किसी भी तरह से इक्कठा करेंगे, इन संसाधनों को दूषित होने से बचायेंगे।
- समाज को कुपोषण मुक्त व स्वस्थ बनाने के लिये संस्कृति और खान-पान को पुनर्जीवित करेंगे, इसके लिए परंपरागत फसलों की
- पहचान, बीजो का संग्रहण व उनका प्रसार-प्रचार करेंगे।
- ग्राम-चोपाल की स्थापना करके अपने गाँव में बच्चों एवं महिलाओं के अधिकारों को दिलाने के लिये अपने गाँव को सबसे उपयुक्त स्थान बनायेंगे जिससे वे भी विकास में साथ चलें।

संविधान एवं सरकार द्वारा आदिवासी विकास की योजनाओं की ओर समाज जन विशेष कर युवकों-युवतियों को प्रेरित करेंगे, जिससे वे मुख्यधारा के विकास के भागीदार बने।

इस प्रकार से प्रयास करेंगे की वागड़ अंचल में सच्ची खेती एवं सच्चा स्वराज के माध्यम से बापू के स्वराज की स्थापना हो।
तथास्तु .....